**International Journal of Multidisciplinary Education and Research**
**ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12**
**Received: 24-05-2019; Accepted: 25-06-2019**
**www.educationjournal.in**
**Volume 4; Issue 4; July 2019; Page No. 106-108**

# सम्बन्धित शोध साहित्य की समीक्षाः महत्त्व एवं स्रोत

**डॉ. मुकेश कुमार**
सहायक प्रोफेसर, एल.एन.टी. शिक्षण महाविद्यालय पानीपत, हरियाणा, भारत

**सारांश**
अब कोई शोधकर्ता शोधकार्य के लिए अग्रसर होता है तो उसके सामने अनेक प्रश्न आते हैं जिनका उत्तर प्राप्त करने में शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण सहायक एवं अनिवार्य होता है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य वे पुस्तकें, ज्ञानकोष, पत्र–पत्रिकाएँ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रन्थ एवं अभिलेख हैं जिनके अध्ययन के द्वारा वह अपनी समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करता है जैसे – समस्या चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं रूपरेखा के निर्धारण आदि। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए गुड, बार तथा स्केटस ने लिखा है – जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिए जरूरी है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धित आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधानकर्ता के लिए भी अपने अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है। सम्बन्धित–साहित्य की सामग्री या स्रोत दो प्रकार के हैं – प्राथमिक–स्रोतों के माध्यम से उपलब्ध सम्बन्धित साहित्य जिसके अन्तर्गत – पत्रिकाओं में उपलब्ध सामायिक साहित्य, शिक्षा अनुसंधान से संबंधित पुस्तकें, वार्षिक–पुस्तकें एवं सर्वेक्षण–प्रतिवेदन आते हैं। द्वितीयक–स्रोतों के माध्यम से उपलब्ध सम्बन्धित साहित्य जिसके अन्तर्गत – शिक्षा विश्व ज्ञानकोश, शिक्षा–सार, शिक्षा–सूचीपत्र, संदर्भ–ग्रंथ–निर्देशिकाएं आदि आते हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि किसी भी शोध समस्या के समाधान हेतु सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण सहायक एवं अनिवार्य होता है।

**मूल शब्दः** आधुनिकतम, अनुसंधानकर्ता, चिकित्सक, छात्र

## प्रस्तावना
जब कोई शोधकर्ता शोधकार्य करने के लिए अग्रसर होता है तो उसके सामने कई प्रश्न आते हैं जिनका उत्तर प्राप्त करने में शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण सहायक एवं अनिवार्य होता है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य वह पुस्तक, ज्ञानकोष, पत्र–पत्रिकाएँ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रन्थ एवं अभिलेख हैं जिनके अध्ययन के द्वारा वह अपनी समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करता है जैसे – समस्या चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं रूपरेखा के निर्धारण आदि। इसके साथ–साथ उसे यह भी देखना होता है कि अभी तक उस समस्या पर कितना कार्य हो चुका है, किस–किस क्षेत्र में तथा क्या–क्या विधि इसमें इस्तेमाल की गई थी। उस शोध कार्य के क्या निष्कर्ष निकले व कहाँ तक उपयोगी सिद्ध हुए तथा अब आगे किस कार्य या पक्ष पर शोध हो सकता है। इन सब प्रश्नों के उत्तरों पर सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण करने से प्रकाश डलता है। सर्वेक्षण के पश्चात् ही शोधकर्ता यह निश्चय कर पाता है कि प्रस्तुत शोध, ज्ञान की नवीन खोज होगी या पहले के अन्विष्ट ज्ञान की पुष्टि है।

## सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्त्व
सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए गुड, बार तथा स्केटस ने लिखा है – "जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिए जरूरी है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धित आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधानकर्ता के लिए भी अपने अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"
इसी प्रकार डब्ल्यू.आर. बोर्ज ने लिखा है, "किसी भी क्षेत्र में साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस आधारशिला को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्त्वहीन होने की संभावना है अथवा यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।"
सम्बन्धित साहित्य से सम्बन्धित सूचनाएं अनेक स्रोतों से प्राप्त होती हैं जैसे – पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, शोध–प्रबन्ध, बुलेटिन, वार्षिकी, ज्ञानकोश, अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन, राजकीय प्रकाशन, निर्देशिकाएं एवं विषय पर प्रकाशित लेख। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्त्व विस्तारपूर्वक निम्नलिखित विचारों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

- यह अध्ययन उन सभी सिद्धान्तों, व्याख्याओं और परिकल्पनाओं को विचार प्रदान करता है जो शोधकर्ता की समस्या के निर्माण एवं निर्धारण में सहायक होते हैं।
- समस्या के अध्ययन की सर्वोत्तम विधि की जानकारी मिलती है।
- शोधकर्ता के ज्ञानकोश में वृद्धि में सहायक होता है।
- शोध से सम्बन्धित तुलनात्मक आँकड़ों को कैसे प्राप्त किया जाए एवं विश्लेषण किया जाए इस प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है।
- साहित्य सर्वेक्षण से शोध क्षेत्र की सीमाएं निर्धारण करने में सहायता प्राप्त होती है।
- इस अध्ययन से व्यर्थ एवं अनुपयोगी समस्याओं के चयन से बचाव होता है।
- वह शोध उपकरण जो पूर्व अध्ययन में उपयोगी सिद्ध हुए हैं, उनकी जानकारी प्राप्त होती है।
- इससे यह सुझाव जो पूर्व शोधकर्ताओं ने इसी प्रकार अग्रिम अध्ययन के लिए दिए होते हैं उनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।

- इस प्रकार शोधकर्ता उन सांख्यिकीय विधियों से अवगत होता है जो परिणामों की वैधता का बोध करा सकती हैं।
- सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से समस्या को विस्तार से समझने एवं परिकल्पना के निर्माण में सहायता मिलती है।

### सम्बन्धित–साहित्य की सामग्री या स्रोत

इसके अन्तर्गत पत्र–पत्रिकाओं में उपलब्ध लेख, निबंध पुस्तिकाएं, सरकारी तथा गैर–सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित वार्षिकी एवं बुलेटिन, शोध–ग्रन्थ, स्नातकोत्तर प्रोजेक्ट वर्क रिपोर्ट्स, शिक्षा सम्बन्धी प्रशासन के प्रकाशन आदि प्राथमिक स्रोत हैं।

शिक्षा के ज्ञानकोष, शिक्षा सूचीपत्र, संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं निर्देशिकाएं, शिक्षा सार, जीवन गाथा सम्बन्धी संदर्भ, उद्धरण–स्रोत आदि द्वितीयक स्रोत हैं।

### प्राथमिक–स्रोतों के माध्यम से उपलब्ध सम्बन्धित साहित्य

#### 1. पत्रिकाओं में उपलब्ध सामायिक साहित्य

सामायिकी वह प्रकाशन है जो सामान्यतया नियमित समयान्तर से उत्तरोत्तर प्रकाशित होता है। इसके अन्तर्गत केवल पत्रिकाएं, समाचार पत्र, मैगजीन आदि ही सम्मिलित नहीं होते वरन् इसमें पंचांग, वार्षिकी निर्देशिकाएं, डाइरैकटरियां, हैंड बुक, राजकीय अभिलेख, समितियों एवं संघों के प्रकाशन आदि भी सम्मिलित होते हैं।

#### 2. शिक्षा अनुसंधान से संबंधित पुस्तकें

- एजूकेशनल रिसर्च फॉर क्लास–रूम टीचर्स
- एजूकेशनल रिसर्च एवं अप्रेजल
- रिसर्च इन एजूकेशन
- एक्शन रिसर्च टू इम्प्रूव स्कूल प्रैक्टिसेज़
- इन्ट्रोडक्शन टू एजूकेशनल रिसर्च

इन पुस्तकों में प्रत्ययों, सिद्धांतों एवं विधियों का विशद वर्णन है।

#### 3. वार्षिक–पुस्तकें एवं सर्वेक्षण–प्रतिवेदन

वार्षिक पुस्तकें वर्ष में एक बार प्रकाशित होती हैं। इसमें पृष्ठ भूमिका प्रदान करने वाले शिक्षा लेखों की अपेक्षा सामयिक महत्त्व के तथ्यों पर विस्तृत रूप से जोर दिया जाता है। इसमें निर्देशिकाएं, सर्वेक्षण प्रतिवेदन, हैण्ड बुकें, पंचांग आदि में वार्षिक पुस्तकों की भांति ही सामग्री एवं तथ्य होते हैं। यह राष्ट्रीय, स्थानीय, राजकीय एवं मण्डलीय स्तर पर प्राप्त होते हैं तथा इसमें सांख्यिकीय एवं वर्णनात्मक ढंग की शुद्ध तथ्यात्मक सूचनाएं रहती हैं।

वार्षिक पुस्तकें एवं सर्वेक्षण प्रतिवेदन, सामयिक शैक्षिक प्रकाशनों के एक विस्तृत क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। अमेरिका में अधिकतर विद्यालय मोनोग्राफों के माध्यम से शैक्षिक अनुसंधानों को प्रकाशित करते हैं। इंग्लैण्ड में भी शिक्षा के अनेक संस्थान मोनोग्राफ एवं बुलेटिन समय–समय पर प्रकाशित करते हैं। भारतवर्ष के वर्तमान काल में इस प्रकार के साहित्यिक स्रोत अपेक्षाकृत सीमित हैं।

### द्वितीयक–स्रोतों के माध्यम से उपलब्ध सम्बन्धित साहित्य

#### 1. शिक्षा विश्व ज्ञानकोश

विश्व ज्ञानकोश बहुत से ग्रंथों का संकलन होता है जिसमें विभिन्न व्यक्तियों की जीवनगाथा सम्बन्धी तथा सामान्य प्रकार के लेख होते हैं। शिक्षा में भी विश्वकोश विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं का समूह होता है। शिक्षा के विश्व ज्ञानकोशों में वाल्टर एस. मुनरो के शैक्षिक शोध के लिए विश्व ज्ञानकोश, अमेरिका का हेनरी डी. रिब्लीन तथा एच. श्यूल द्वारा लिखित Encyclopaedia of a Modern Education, पाल मुनरो द्वारा लिखित विश्व का ज्ञानकोश, आस्कर जे. कप्तान का Encyclopaedia of Vocational Guidance आदि मुख्य हैं। शिक्षा का विश्व ज्ञानकोश 1980 में भारत सरकार के हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित है।

हमारे देश में अभी तक शैक्षिक अनुसंधान का विश्वकोश जैसा कोई भी ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ है। कुछ वर्ष पूर्व श्री जे.पी. नायक ने भारतीय शिक्षा का विश्व ज्ञानकोश तैयार करने हेतु प्रारम्भिक प्रयास किया किन्तु वह पूर्ण न हो सका। शिक्षा के क्षेत्र में आगामी शोध की दृष्टि से ऐसे ज्ञानकोश का प्रकाशन हमारे देश में अत्यन्त आवश्यक है।

#### 2. शिक्षा–सार

इसमें उन सब लेखों के सार दिए जाते हैं जो महत्त्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं; एक अनुसंधान कार्य में सहायक होते हैं। इनसे अनुसंधानकर्ता अपने विषय से सम्बन्धित लेखों के सार एवम् अनुसंधान परिणाम जान सकता है एवं उनसे अपने कार्य में सहायता ले सकता है।

शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में प्दकपंद म्कनबंजपवद ।इजतंबज हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रकाशित शिक्षा–सार है। यह भारतीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किया जाता है जिसमें 50 भारतीय पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का सार एवं सूचियां प्रकाशित की जाती हैं। वह शीर्षक जिनके अन्तर्गत ये सूचियां प्रकाशित होती हैं इस प्रकार हैं, जैसे – शिक्षा दर्शन, मनोविज्ञान, परीक्षण एवं मापन, परीक्षाएं, छात्र एवं छात्र संगठन, शैक्षिक एवं शारीरिक शिक्षा, प्राथमिक, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं शैक्षिक प्रसारण आदि। Basic Education Abstract में शिक्षा से संबंधित 12 क्षेत्रों के लेख पाँच भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। Education Studies and Investigation के अन्तर्गत भी शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित लेख एवं अनुसंधान सार दिए होते हैं।

#### 3. शिक्षा–सूचीपत्र

इसमें सामान्य तथा विशिष्ट सूची पत्र शामिल हैं। भारत में इस प्रकार का पहला प्रकाशन शिक्षा मंत्रालय दिल्ली द्वारा 1949 में Education Quarterly के नाम से शुरु किया गया था। यह लगभग 15 शैक्षिक पत्रिकाओं से संबद्ध सूची प्रकाशित करता था। प्रत्येक अंक में 300 से 400 तक प्रविष्टियां होती थीं। अब इसका नाम Indian Education प्दकमग हो गया है जो केन्द्रीय सचिवालय के शिक्षा पुस्तकालय से प्रतिमास प्रकाशित होता है और सभी प्रमुख शैक्षिक पत्रों की सूची देता है।

विशिष्ट सूची पत्रों में Education Index जो कि New York America से प्रकाशित होता है; सबसे प्रमुख एवं प्रसिद्ध है।

#### 4. संदर्भ–ग्रंथ निर्देशिकाएं

शैक्षिक अनुसंधान के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं के लिए कुछ उपयोगी ग्रंथ सूचियां एवं निर्देशिकाएं प्रकाशित की जाती हैं।

'उत्तर भारती' उत्तर प्रदेश में एवं Register of Educational Research in India में भारत के विभिन्न भागों से प्रकाशित शैक्षिक अनुसंधानों की सूची दी जाती है।

### निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्य पढ़ने के पश्चात् ही अनुसंधानकर्ता अपने लक्ष्य को तथा लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग को ढूंढने में सफल हो सकता है। अतः अनुसंधान कार्य के लिए संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण नितांत आवश्यक है।

**संदर्भ सूची**

1. सिंह, अरुण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पृ. 72
2. शर्मा, डॉ. आर.ए., शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया, पृ. 158
3. वशिष्ठ, डॉ. राजेश कुमार, शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी की विधियाँ, पृ. 109
4. पाल, डॉ. हंसराज, शैक्षिक–शोध, पृ. 31
5. भटनागर एवं भटनागर, शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली, पृ. 47